भौसले का ही फिल्म 'नौकर' के लिए गाया 'पल्लो लटके', 'दिल दिया दर्द लिया' के लिए 'हाय हाय रसिया तू बड़ा बेदर्दी', 'रजिया सुलतान' के लिए 'हरयाला बन्ना आयो रे', 'शतरंज के मोहरे' के लिए 'जा री हवा छेड़ तेरी सरगम', 'बहुरुपिया' के लिए 'आ रे बांके सिपहिया', 'आरोप' के लिए 'चले आओ न सताओ' आदि शामिल हैं।

इन गीतों के संगीतकारों ने अपनी धुन में राजस्थानी लोक संगीत का उपयोग किया है। कुछ ऐसे भी गीत हैं जिनकी धुनें लोक संगीत से सीधे-सीधे तो प्रभावित नहीं है पर इन गीतों में राजस्थान के लोक की खुशबू अवश्य है। ऐसे गीतों में 'आज लगी लगी नई धूप' (आंखों देखी), 'आएगा कोई आएगा' (वध), 'अगले जनम मोहे बिटिया कीजो' (उमराव जान), 'आयोजी' (सत्याग्रह), 'बाजन दे ढोल' और 'गूं गूं गुटर' (सुपर से ऊपर), 'बन्ना रे बागां में झूला घाल्या' (गंगा की कसम), 'बन्नी आवेला थारो बन्ना' (इसी लाइफ में), 'भंवरा मां भटके' (शुद्ध देशी रोमांस), 'बिंदिया का रंग उड़ जाए (प्यार की धुन), 'चक्कर घूम्यो' (आमिर), 'छम्मा छम्मा' (चाइना गेट), 'मालन थारा बाढ़ में (क्रान्तिक्षेत्र), 'मारा ठुमका बदल गई चाल (क्रान्ति), 'मोरे सैंया' (मिर्च), 'पास आजा बालम' (मिस्टर रोमियो), 'पिया जैसे लड्डू मोतीचूर वाले' (रेडियो), 'सजन के घर जाना है' (लज्जा), 'तेरे बिना नहीं लागे जिया' (एक पहेली लीला), 'थारे वास्ते रे ढोला' (बंटवारा), 'टरकी छोकरों' (पीके), 'आवे रे हिचकी' (मिर्जिया), 'इंजन की सिटी' (खूबसूरत), 'सुनो रे भाइला' (गॉडमदर), 'दामादजी अंगना है पधारे' (रेडियो), 'दरवाजा खुला छोड़ आई नींद के मारे (नाजायज), 'घेरदार घाघरो' (अर्जुन पंडित), 'हाथ में थारे सजे चूड़ो' (जलपरी), 'हिचकी' (पार्च्ड), 'इनाम म्हारो देती जा' (धर्मसंकट), 'काहे को ब्याही बिदेस' (मांग भरो सजना) को गिना जा सकता है। राजस्थानी लोक कथाओं के मर्मज्ञ स्व. विजयदान देथा की कहानी 'दुविधा' पर मणि कॉल के बाद शाहरुख खान ने अमोल पालेकर के निर्देशन में 'पहेली' बनाई थी जिसमें गुलजार के लिखे 'धीरे जलना', 'फिर रात कटी', 'कंगना रे', 'लागा रे जल लागा' और 'मिन्नत करे' आदि राजस्थानी रंग से भरे गाने थे।

अब बात करते हैं राजस्थान के लोकप्रिय नृत्य गीत 'घूमर' की जिसका इस्तेमाल भी कई फिल्मों में हुआ है। अमिताभ बच्चन अभिनीत 'आज का अर्जुन' (1990) में बप्पी लहरी का रचा गीत 'गौरी है कलाइयां' था जिसमें पहली बार मटकों का बेहद सुन्दर उपयोग देखने को मिला। इस गीत में राजस्थानी लोक गीत 'बन्ना रे बागा में झूला घाल्या' का प्रयोग किया गया है। कोरस इस पंक्ति को गाती हैं और इस पंक्ति के जवाब में लता जी गाती हैं, 'आया रे छैल भंवर जी आया'। 'बन्ना रे...' गीत के साथ घूमर नृत्य शैली में नृत्य किया जाता है। घूमर नृत्य राजस्थान के प्रसिद्ध लोक नृत्यों में से एक है। यह नृत्य राजस्थान में प्रचलित अत्यंत लोकप्रिय नृत्य है, जिसमें केवल स्त्रियां ही भाग लेती हैं। इसमें लहंगा पहने हुए स्त्रियां गोल घेरे में लोकगीत गाती हुई नृत्य करती हैं। जब ये महिलाएं विशिष्ट शैली में नाचती हैं तो उनके लहंगे का घेर एवं हाथों का संचालन अत्यंत आकर्षक होता है। इस नृत्य में महिलाएं लम्बे घाघरे और रंगीन चुनरी पहनकर नृत्य करती हैं। इसी सौन्दर्य को 'गोरी हैं कलाइयां' गीत में दर्शाया गया है। घूमर का सबसे ताजा उदहारण है संजय लीला भंसाली की फिल्म 'पद्मावत' का 'घूमर घूमर घूमे सा' जिस पर दीपिका पादुकोण ने सुन्दर नृत्य प्रस्तुत किया।

'स्वर सरिता' आपको नियमित भेजी जाती रही है, अब इसे निरन्तर संचालित करते रहने के लिए कृपया स्वयं प्रेरणा से सदस्यता शुल्क भिजवा कर सहयोग करें।

एक वर्ष का सदस्यता शुल्क : ₹600 छह वर्ष का सदस्यता शुल्क : ₹3000

- चैक/डी.डी. -'वीणा प्रकाशन', जयपुर (VEENA PRAKASHAN, JAIPUR) के नाम निम्न पते पर भेजें या
- बैंक ऑफ बड़ौदा, जौहरी बाजार, जयपुर के अकाउंट नं. 01150200000933 में वीणा प्रकाशन के खाते में जमा करवाएं।
- बैंक की रसीद के साथ अपना पूरा पोस्टल एड्रेस, पिनकोड एवं फोन नम्बर हमें मेल करें।

वीणा प्रकाशन

हल्दिया हाउस, जौहरी बाजार, जयपुर-302003 फोन - 0141-2572666, 4022623

Email-veenaprakashan@gmail.com website: veenaswarsarita.com